[श्री नरेन्द्र सिंह]

विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों जिन्होंने इसकी उपेक्षा की है, इसको गंभीरता से नहीं लिया, जन जीवन के साथ खिलवाड़ किया है, उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाय। मान्यवर, इस भयंकर बीमारी से प्रभावित लोगों को जो अपनी रोजी-रोटी कमाने में असमर्थ हो गये हैं, उनके लिये रोजी-रोटी का प्रबन्ध किया जाय। वहां बहुत भयावह स्थिति है, खतरनाक स्थिति है। मैं केन्द्रीय सरकार से मांग करूंगा कि वह इस ओर अविलम्ब ध्यान दें।

REFERENCE TO THE REPORTED INVOLVEMENT OF SOME OFFICERS OF THE STC IN A FINANCIAL SCANDAL

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, पहले मैं उधर देवियों को नमन करता हूं, जैन साहब को नमन करता हूं। मैं जानता हूं कि ये...

श्री जे० के० जैन (मध्य प्रदेश) : महोदय, एक कहावत है कि चोर की दाढ़ी में तिनका। उनको पता है कि जो यह मामला उठाने जा रहे हैं उसमें कोई दम है नहीं... **(व्यवधान)** लेकिन मैं आपसे निवेदन जरूर करता हूं कि मुझे एक मिनट बोलने की इजाजत जरूर दी जाय।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : चोर मैं कहलाऊं और दाढ़ी में तिनका इनके। इन देवियों से मेरा निवेदन है कि शोर मचा कर मुझे झंझट पैदा न करें। यदि ज्यादा गड़बड़ करेंगी तो मैं भी उलटा हमला करूंगा।

श्रीमती सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र) : मैं बोल ही नहीं रही हूं। यदि आप बोलने के लिये बाध्य नहीं करेंगे तो मैं नहीं बोलूंगी।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : श्रीमन्, मैं दो रूप में बड़ा आभारी हूं। एक तो आपने मुझे इसे कहने की सुविधा दी और दूसरे इसको आपने बिल्कुल अंत में रखा।

श्री उपसभापति : अभी एक नाम और है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : स्टेट्स मैन में एक समाचार छपा है, जिसको सब ने पढ़ा होगा... लेकिन इसमें समाचार पूरा नहीं है। इस में स्वराजपाल जी का नाम दिया गया है मैं जानता हूं जैन साहब या जिन मित्रों की दोस्ती या सम्बन्ध है उनसे, वे तो जरूर शोर मचाएंगे ... **(व्यवधान)**

श्री जे० के० जैन : हम आपकी तरह बेवफा नहीं हैं ... **(व्यवधान)**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : बिलकुल मैं कब कह रहा हूं कि आप बेवफा हैं। मैं तो यही कह रहा हूं कि आप बावफा हैं। उनसे फायदा उठायेंगे तो उनकी रक्षा करेंगे **(व्यवधान)** श्रीमन्, यह बड़ा गम्भीर मामला है। इसमें केवल स्वराजपाल का हाथ नहीं है इसमें एस०टी०सी० के बड़े अफसर शामिल हैं। स्वराज पाल मुजरिम है या नहीं हैं मैं नहीं जानता लेकिन एस०टी०सी० हमारी सरकार का एक बहुत बड़ा विभाग है। यदि उसके अफसर कोई गड़बड़ी करते हैं तो उनके खिलाफ कार्यवाही करने के लिए मैं समझता हूं उधर के लोग भी सहमत होंगे। इसलिए मैं विनती करता हूं कि आप शान्ति से सुनें। जनता सरकार के सत्ता में आने से कई साल पहले एक सौदा किया गया। एस० टी० सी० ने नोगा नाम की एक स्विस कम्पनी के साथ चीनी का सौदा किया **(व्यवधान)** वह 6 लाख टन चीनी हिन्दुस्तान से एस०टी०सी० के माध्यम से खरीदेंगे जिसकी दर 11 सौ डालर प्रति टन होगी। कम्पनी ने यह माल नहीं उठाया। उसके बाद बातचीत हुई और यह

तय हुआ कि कम्पनी केवल 60 हजार टन खरीदेगी और उसका रेट लगभग 520 डालर प्रति टन होगा। यानी जितना मूल आर्डर था उसको कम कर दिया गया और कीमत भी आधी कम कर दी गई। उसके बाद भी कम्पनी ने माल नहीं उठाया। लिहाजा एस०टी०सी० के लोगों ने आगे बातचीत की। बातचीत में यह तय हुआ कि एस०टी०सी० के अधिकारी के नाम तथा अन्य किसी नामों से 4.5 मिलियन डालर जो लगभग 4 करोड़ से ऊपर बैठता है, स्विस बैंक में जमा कर देंगे। पैसा जमा हो गया। इस बीच में जनता सरकार सत्ता में आ गई। यह जानकारी मिली और सरकार की ओर से लंदन की अदालत में... (व्यवधान) भाई कहने तो दो।

श्री सैय्यद सिब्ते रज़ी (उत्तर प्रदेश): यह आपका नया अलायेंस आपको गड़बड़ कर रहा है। (**व्यवधान**)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: लन्दन की रिफाइन्ड शुगर एसोसियेशन के सामने मामला ले जाया गया। वहां पर नोगा कम्पनी के लोगों ने स्वीकार किया कि हम ने 4.5 मिलियन डालर स्विस बैंक में जमा कर दिया था। हमारा समझौता हो चुका है इस लिये हम कोई धन देने को तैयार नहीं हैं; लेकिन लंदन का कानून उन पर लागू नहीं था इस लिये कम्पनी स्विस कोर्ट में गई। कोर्ट में जाने के बाद कहा कि 4.5 मिलियन डालर समझौते के रूप में जमा कर दिये हैं इस लिये हम किसी चीज के देनदार नहीं हैं। श्रीमन्, मैं यह पूछना चाहता हूं कि स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन के ये कौन से अधिकारी थे अगर एस० टी० सी० ने समझौता किया, जायज या नाजायज, तो वह पैसा कम से कम भारत सरकार के पास जमा हो जाना चाहिए था लेकिन या एस० टी० सी० को मिलना चाहिए था वह पैसा एस० टी० सी० के पास न आते हुए स्विस बैंक में जमा किया गया। वे कौन अधिकारी हैं यह जानने की आवश्यकता है इस के बाद जनता सरकार को और बातें पता लगीं लंदन में कार्यवाही के बाद भारत की एम्बसी में हमारे एम्बेसेडर स्विटजरलैंड के ला डिपार्टमेंट के लोग और भारत के एक वकील बैठे और यह तय हुआ कि स्विस सरकार बैंक के अकाउन्ट का खुलासा हमें देगी क्योंकि हमारे वकील ने कहा कि (**व्यवधान**) वट डू यू मीन? (**व्यवधान**) हमारे वकील ने उन्हें बताया कि स्विस कानून के अनुसार यदि वहां का कोई कर्मचारी किसी विदेशी के साथ भ्रष्टाचार की गड़बड़ करता है तो वह जुर्म करता है उसको सजा देनी चाहिए। जब यह बात उनके सामने आई तो स्विस सरकार ने यह स्वीकार किया कि वह सारी डिटेल्ज हम को दे देंगे अपने कानून में परिवर्तन कर के।

लेकिन जब यह डिटेल मांगी गई तो मुकदमें में तीन मुदाले लोग थे, रिस्पोन्डेन्ट थे जिसमें एक नाम स्वराजपाल का था, एक एस० टी० सी० के कर्मचारी का था। लेकिन इस बीच के अन्दर जनता सरकार गिर गयी बाद में जब पुलिस के द्वारा हिन्दुस्तान को रिपोर्ट मिली तो उसमें तीन नामों की जगह दो नाम दिये गये थे, एक नाम को काट दिया गया। समस्या यह है कि वह तीसरा नाम किसका है और एस० टी० सी० के ये अधिकारी कौन हैं। सी० बी० आई की इनक्वायरी की गयी थी और उसमें जो डी० एन० सिंह थे, वे हटा दिये गये आज वे उड़ीसा में अपनी एड़ियां रगड़ रहे हैं। एक ऐसे डिपार्टमेंट के अफसर हैं जिनके पास नाम का टेलीप्रिंटर भी नहीं है। मैं

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]
सरकार से निवेदन् करना चाहता हूं कि सी० बी० आई० की इन्क्वायरी की फाइल सदन के पटल पर रखी जाये। दूसरे वह तीसरा व्यक्ति कौन है जिसका नाम ले देकर काट दिया गया था। [illegible] के आगे कार्यवाही क्यों नहीं की गयी। [illegible] में एक बात और कह कर समाप्त करूगा। अखबार ने एक और बडी गंभीर बात लिखी है उसको मैं कोट करना चाहता हूं... **(व्यवधान)**

श्रीमती सरोज खापर्डे : आप बैठ जाइये...

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : देखिये आपसे यह अपेक्षा नहीं है। मैं कोट करता हूं :

"Neither the note prepared for the Swiss Ambassador nor Mr. Jethmalani's letter to the Prime Minister could be expected to present all the facts of the case...We have, for example, obtained a copy of a small note relating to the case in which is scribbled in hand "After confirming from the Bank, should give a ring to Mrs. Frankel at 493-2968". We have it on authority of a hand-writing expert that this instruction was written by the same person another specimen of whose writing identifies him as a senior official of the Government of India."

मतलब स्विस बैंक के इस मामले से संबंधित जो हमारा एस० टी० सी० का अधिकारी है उसका ही यह नोट है। सवाल पैदा होता है कि यह मिसेज फ्रेंकल कौन है? यह मिसेज फ्रेंकल नाम की महिला कौन है? वह किसी न किसी के पीछे रह फर्जी नाम से काम कर रही हैं। इस बात की पूरी जानकारी सदन के सामने रखनी चाहिए। लोगों को संदेह हो रहा है कि इसमें कुछ बड़े-बड़े लोग हैं जो कमीशन लेते रहे हैं। मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं, अगर शोर मचायेंगे तो ले लूंगा **(व्यवधान)** शोर मचा दिया

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Do not write this part of the speech... (*Interruptions*).

JAGDISH PRASAD MATHUR:**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Do not record this.

JAGDISH PRASAD MATHUR: मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं सरकार से कि क्या**

MR. DEPUTY CHAIRMAN' Do not record anything... (*Interruptions*)

SHRI SYED SIBTE RAZI: What he has stated should be expunged from the proceedings... (*Interruptions*).

SHRI J. K. JAIN: On a point of order. (*Interruptions*)

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): I want to say that Shri Mathur is bringing in the name of the Prime Minister directly or indirectly. I strongly refute the allegations and insinuations he is making. It was his Government which looked in to the whole matter and they could not bring out anything and as a result the case was simply closed. Now in this discussion he is making the same total insinuations and absolutely baseless complaints. I accuse Shri Jagdish Prasad Mathur that he is in the habit of making absolutely baseless allegations... (*Interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will look into all the records.

SHRI J. K. JAIN: On a point of order.

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE (Maharashtra): Why do you allow him? There is no Special Mention in his name.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is on a point of order... (*Interruptions*).

**Not recorded

श्रीमती सरोज खापर्डे : इतने सारे एलीगेशन्स लगाये हैं हमारी नेता पर... **(व्यवधान)**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैंने कोई नाम तो नहीं लिया है । ... **(व्यवधान)**

श्री सत्यपाल मलिक : (उत्तर प्रदेश) : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । ... **(व्यवधान)**

कु० सरोज खापर्डे : यह इनकी पार्टी* है ।... **(व्यवधान)**

श्रीमती मोनिका दास (कर्नाटक) : यह * ही नहीं * है ... **(व्यवधान)**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैंने तो कोई नाम ही नहीं लिया है । ... **(व्यवधान)**

श्री जे० के० जैन : उपसभापति जी, 1977 में जब जनता सरकार ने या जनता पार्टी ने देश की बागडोर संभाली, हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि सारा विश्व जानता है कि उन्होंने इस प्रकार से विच हंटिंग कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के खिलाफ की कि आज जिस समाचार पत्र को लेकर हमारे माननीय जगदीश प्रसाद माथुर यहां खड़े हुए हैं और स्पेशल मेंशन को आपने स्वीकार किया, खैर हम तो आपके सामने नतमस्तक हैं कि चेयर जो एडमिट करती है, उसको हम इज्जत करते हैं, लेकिन पहली बात तो यह एडमिट नहीं होना चाहिए क्योंकि जो विच हंटिंग जनता सरकार ने कांग्रेस के खिलाफ की आज पांच वर्ष के बाद एक इसी प्रकार की मरी हुई हड्डी इस अखबार के अन्दर प्रकाशित हुई । मैं जानना चाहता हूं कि जनता सरकार ने क्या कोई कसर छोड़ी थी कि जिस प्रकार उन्होंने केसेज़ बनाये या जो 1977 में जो इन्क्वायरी मोरारजी देसाई ने एक पत्र लिखकर भेजा किस अधिकार से उन्होंने जेठमलानी को ज्यूरिच भेजा और एन० के० सिंह को उनके साथ भेजा । यदि इस केस के अन्दर कुछ होता तो क्या यह बता सकते हैं कि जिन्होंने कमीशनों की स्थापना की, जिन्होंने बड़े बड़े कमीशनों की स्थापना की, अन्डो और मुर्गियों की चोरी का इल्जाम नेता के ऊपर लगाया । लेकिन यह बातें झूठी थी, यह सरासर साजिश थी ।

जेठमलानी ने मोरारजी देसाई को कहा कि मुझको ज्यूरिज भेज दो और मैं वहां जाकर एक केस बनाऊंगा और नोगा एंड कम्पनी उसको जाकर— मोरारजी के पिट्ठू जेठमलानी ने इस बात की धमकी दी कि देखो चार करोड़ रुपया मैं तुम्हारा माफ करा सकता हूं । माथुर साहब आप कहते हैं कि एस० टी० सी० को नुकसान हुआ । किसने उसको लालच दिया है, इस बात का कि चार करोड़, जो राशि एस० टी० सी० ने क्लेम की है, उसको वह माफ करा देंगे ? ... **(व्यवधान)**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : वह पैसा कहां जमा हुआ था ?

श्री जे० के० जैन : उपसभापति महोदय,

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : हम लोगों को भी इसी प्रकार समय देना होगा ।

श्री जे० के० जैन : हम सारी रात यहां बैठने के लिए तैयार है लेकिन सारे झूठ का पर्दाफाश करेंगे ।

श्री सत्यपाल मलिक : हम लोग भी अपने नाम देते हैं डिबेट के लिए ।

श्री जे० के० जैन : इस नोगा एंड कम्पनी के मालिकों ने लालच और डर दिया और यह कहा कि तुम केस करो कोर्ट के अन्दर

*Expunged as ordered by the Chair.

[श्री जे० के० जैन]

और स्वराज पाल का नाम दो । उस ने केस किया तो स्वराजपाल को उस की जानकारी मिलनी स्वाभाविक थी । जो मामले कोर्ट मे होते हैं उन को न माथुर झुठला सकते हैं, न मैं झुठला सकता हूं । स्वराजपाल ने इस झूठे इल्जाम का पर्दाफाश कर के रख दिया । उस ने डिफेमेशन केस किया उस कम्पनी के ऊपर क्योंकि स्वराजपाल का उस से कोई सम्बन्ध नहीं था । मैं जानना चाहता हूं कि उस समय के प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई ने भारत सरकार का लाखों रुपया जेठमलानी और एन० के० सिंह को अय्याशी करने के लिए ज्यूरिच में महीनों बिठा कर रखा, उस पर कितना रुपया खर्च किया गया ? जेठमलानी ने मोरारजी देसाई के साथ मिल कर जो षडयन्त्र किया उस के बारे में सरकार को बयान देना चाहिए । मैं अन्त में निवेदन करूंगा. . .

श्री सत्यपाल मलिक : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री जे० के० जैन : पहले भी इस तरह के समाचार इसी अखबार में छप चुके हैं और उन का खंडन किया गया । इस तरह की कापी बना कर, चेकों का झूठा नमूना बना कर छापा गया । आज देश की जनता के सामने ही नहीं बल्कि विश्व की समस्त जनता के सामने इन लोगों का सिर नीचा हुआ । उस के बावजूद ये अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहे हैं । मैं निवेदन करूंगा कि इस तरह के समाचारों के छपने के आधार पर अगर इस प्रकार के स्पेशल मेंशन यहां पर होते रहे तो. . .

एक माननीय सदस्य : तो आप को हटा दिया जायेगा ।

श्री जे० के० जैन : संसदीय प्रणाली के ऊपर लोगों का विश्वास उठ जायेगा, लोग सन्देह करने लगेंगे कि इस प्रकार के समाचार छपवाये जाते हैं और उस को संसद में उठाया जाता है । अध्यक्ष महोदय, इन शब्दों के साथ में आप का आभारी हूं कि आप ने मुझे समय दिया ।

श्री सत्य पाल मलिक : मैं आप की व्यवस्था चाहता हूं. . . **(व्यवधान)**

संसदीय कार्य विभाग में राज्य मंत्री (श्री कल्पनाथ राय) : कोई व्यवस्था नहीं है ।

श्री सत्यपाल मलिक : आप मिनिस्टर हैं, मिनिस्टर की तरह बिहेव करिए **(व्यवधान)** आप * मत करिए, आप * कर रहे है **(व्यवधान)** आप *आदमी हैं, आप को* नहीं है **(व्यवधान)** किस ने आप को मिनिस्टर बना दिया,* आदमी है आप,* **(व्यवधान)** मुझे व्यवस्था पूछने का अधिकार है । मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, मैं आप की व्यवस्था चाहता हूं **(व्यवधान)** आप बैठाइये इन को. . . **(व्यवधान)**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will not allow the House to go on like this ... (*Interruptions*) मिस्टर मलिक, या तो आप क्षमा मांगिए **(व्यवधान)**

श्री जे० के० जैन : जी*
(व्यवधान)

(*Several interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nobody will go on record.

SEVERAL HON. MEMBERS: (*Continued to speak*).

श्री उपसभापति : श्री मलिक, आप ने जो व्यवहार किया है, वह में समझता हूं कि संसदीय परंपरा के विपरीत है । आप कृपा करके सदन से क्षमा मांगिए । **(व्यवधान)**

---

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE: Mr. Deputy Chairman, most respectfully I would submit today is the closing day of the Session. I know sometimes Members become emotional. But we should not go to the extent where we should lose control over ourselves and do something which is beneath the dignity of the House. Just now when the honourable Member made out a point, everybody from this side appreciated that he made out a good point. This is the spirit in which we should all work. I do appreciate that he has done it under an emotional surcharge. So let us restore normalcy and let us see that we end this Session with peace and harmony. This is my humble appeal to the honourable Members.

श्री सत्यपाल मलिक : नेता सदन ने जो बातें कही हैं मैं उन का आदर करता हूं और में सदन मैं कोई अनरूली बिहेवियर के पक्ष मैं नहीं रहा, लेकिन मैं सदन में एक व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता था। मेरा जो भी व्यवहार आप की दृष्टि में असंसदीय और अशोभनीय है उस के लिये मुझे खेद है। अब आप मेरा व्यवस्था का प्रश्न सुन लें। मैं कोई कंट्रोवर्शियल बात नहीं करना चाहता। मैं इतना ही निवेदम कर रहा था कि माननीय माथुर जी ने जो मामला उठाया – मैं किसी का नाम लेने के पक्ष में नहीं हूं, लेकिन अभी मामला इस स्थिति में है कि (**व्यवधान**) नेता सदन ने जो बातें कही है उस के बाद चूंकि आज तो आखिरी दिन है इसलिये अगले सत्र मैं आप इस पर चर्चा कराने के लिये व्यवस्था दें (**व्यवधान**)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please take your seats. (*Interruptions*).

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ (Madhya Pradesh): Mr. Deputy Chairman, Sir, in this very House... (*Interruptions*). You kindly listen. In this very House a Resolution was passed indicting the leaders of the Opposition. That should be implemented first before we proceed further. Vaidiayalingam Commission report should be implemented.

SHRI ERA SEZHIYAN (Tamil Nadu): Mr. Deputy Chairman, Sir,... (*Interruptions*).

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Let us start with that. You accept my challenge. (*Interruptions*).

SHRI ERA SEZHIYAN: Sir, as mentioned by the hon. Leader of the House, this being the last day of the Session, we have been working overtime and probably so much of passion and other things have come in. But, Sir, it is also true that this is a House where we have to debate. We the representatives of the people, and all the parties may have different stances on a particular issue. But the best way is to debate however unpalatable something will be. After all, Mr. J. P. Mathur made his Special Mention on the basis of a press report which may be complete or may not be complete. There may be the other side to the same picture which the Members or the Minister that side will present. Today, it is only a Special Mention. Therefore, I think, we should have a debate on that. If you want to substitute loudness for logic, I do not know where this House or any other House will end up. Therefore, I would agree with the Leader of the House. And let us have a dispassionate discussion on this. This being the last day of the Session, we may not have this one. At least, in the next session, let us have a discussion in the first week itself. (*Interruptions*).

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: You condemn Mr. Malik's behaviour.

SHRI ERA SEZHIYAN: All right, I apologise, on his behalf, for whatever unseemly thing has happened on this side. And for whatever unseemly thing has happened on the other side, it is for your ...(*Interruptions*).

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Who are you to apologise for him? (*Interruptions*).

SHRI ERA SEZHIYAN: Apart from whatever has happened, I do not know how far interruptions, attempts to haul down a Member and loudness where logic fails are going to be parliamentary or how far they are going to help this thing. I am not blaming anybody. We all belong to the same House. Whatever is being done here, the blame is going to come to me when I go to the public...(*Interruptions*).

श्रीमती सरोज खापर्डे : कभी इस तरह की हरकत नहीं हुई है। **(व्यवधान)**

SHRI ERA SEZHIYAN: All right, Madam, I apologise for everything. I apologise for whatever has been said on this side and also whatever has been said that side. For everything.. (*Interruptions*).

SHRI J. K. JAIN: You condemn him for what he has done today.

श्री रामेश्वर सिंह (उत्तर प्रदेश) : मेरा इस पर एक निवेदन है। आप सुन लें। **(व्यवधान)** मैं बहुत दुख के साथ कहना चाहता हूं कि इस हाउस की यह परंपरा रही है **(व्यवधान)** गालियां देना बुरी बात है और हमेशा मैंने खेद प्रकट किया है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let us go to the next item—Mr. Bhattacharya. (*Interruptions*). The Leader of the House has explained everything: There is nothing left now... (*Interruptions*)

श्री रामेश्वर सिंह : मुझ से अगर ऐसा हुआ है तो मैंने खेद प्रकट किया है। सत्यपाल मलिक ने भावावेश में कुछ कह दिया है तो उसके लिये मैं भी क्षमा चाहता हूं। लेकिन सवाल इस बात का है कि क्या सत्तापक्ष जो अपना रुख दिखा रहा है, हम भी सत्तापक्ष में रहे हैं और आप अपोजिशन में रहे हैं **(व्यवधान)**

श्री हंसराज भारद्वाज : हम लोगों को जो 1977-80 में तकलीफ हुई थी हम जानते हैं। आप हमारे घावों पर नमक मत छिड़किये। **(व्यवधान)** हम आपको फांसी पर लटका सकते थे। परन्तु नहीं ... **(व्यवधान)**

REFERENCE TO THE REPORTED DROUGHT CONDITIONS IN EASTERN U.P.

SHRI G. C. BHATTACHARYA (Uttar Pradesh): Mr. Deputy Chairman, Sir, I want to bring to the notice of the Government, through you, that there is acute drought situation prevailing in the eastern parts of Uttar Pradesh due to the total failure of monsoon. Sir, you know that eastern U.P. is very poor and a backward region of this country and the peasantry there with great difficulty could collect some seed and plough their fields. If you just happen to travel that side, you will see that due to lack of rain their entire crop has been totally destroyed. (Interruptions).

श्रीमती सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र) : रामेश्वर सिंह जी आप हंस रहे है ... **(व्यवधान)**

श्री उपसभापति : आप इनको बोलने दीजिए। **(व्यवधान)**

श्री सैयद सिब्ते रजी (उत्तर प्रदेश) : डिप्टी चेयरमैन साहब, मैं आपको यह अर्ज करना चाहूंगा कि नेता सदन के कहने के बावजूद अभी तक विरोधीपक्ष के लोग, खासतौर से हमारे लोकदल के सदस्यों पर कोई असर नहीं हुआ है। हम अपने तमाम जज़बातों को दबा कर बैठे हुए हैं। अगर इन्होंने सीरियसनैस नहीं दिखाई और जो बदतमीजी यहां पर की गई उसके लिये खेद प्रकट नहीं किया, क्षमा नहीं मांगी तो हम इस मामले को बहुत सीरियसली लेंगे